मानव मल से विद्युत का उत्पादन : क्रांतिकारी पहल

❑ सी.के. सिसौदिया

छाया : राजकुमार साहू

मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान भोपाल जिले की तहसील बैरसिया के ग्राम कुटकीपुरा में बायो विद्युत संयंत्र का उद्घाटन करते हुए

राजधानी भोपाल से लगभग 30 किलोमीटर दूर बैरसिया तहसील का ग्राम कुटकीपुरा नवाचारों को अपनाने वाले ग्राम के रूप में जाना जाता है। ग्रामीण विकास कार्यक्रम के क्रियान्वयन में कुटकीपुरा अग्रणी रहा है। गाँव में मानव मल से विद्युत उत्पादन का संयंत्र एक ऐसा नवाचार है, जिसने वैज्ञानिकों, ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम से जुड़े विशेषज्ञों, कृषि वैज्ञानिकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है।

मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने पिछले दिनों कुटकीपुरा ग्राम में मानव मल आधारित इस बायो विद्युत संयंत्र का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मानव मल से जो सर्वाधिक त्याज्य होता है, उससे आज की प्रमुख जरूरत, पर्यावरण को बगैर नुकसान पहुँचाए बिजली पैदा करना एक क्रांतिकारी पहल है।

मानव मल से विद्युत उत्पादन की तकनीक को व्यवहार में लाकर गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत की संभावना को तलाशने में ग्राम कुटकीपुरा के पंचायत प्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों ने अद्‌भुत और आश्चर्यचकित करने वाला कार्य किया है।

कुटकीपुरा बायो विद्युत संयंत्र

- गाँव में मानव मल से विद्युत उत्पादन का संयंत्र एक ऐसा नवाचार है, जिसने वैज्ञानिकों, ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम से जुड़े विशेषज्ञों, कृषि वैज्ञानिकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है।
- मानव मल से विद्युत उत्पादन की तकनीक को व्यवहार में लाकर गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोत की संभावना को तलाशने में ग्रामीणों ने अद्‌भुत और आश्चर्यचकित कर देने वाला कार्य किया है।
- शौचालयों की सीवेज लाइन को गाँव के बाहर खेत में मानव मल विद्युत संयंत्र तक पहुँचाया गया है।
- संयंत्र में मानव मल के द्वारा उत्पन्न होने वाली गैस से जनरेटर के माध्यम से विद्युत उत्पन्न की जाती है।
- संयंत्र से पाँच किलोवॉट विद्युत बनती है जिससे लगभग 200 से 300 बल्ब जलाए जा सकते हैं, विद्युत मोटर चलाई जा सकती है।
- लगभग 22 लाख रुपये लागत के मानव मल से विद्युत उत्पादन तकनीक ने एक नई पहल शुरू की है जो अनुकरणीय है।

कुटकीपुरा गाँव में 50 हजार लीटर के ओवर हेड टैंक के माध्यम से घर-घर टेपवाटर सप्लाई है। इससे पेयजल समस्या को दूर करने के साथ ही ग्रामीण फ्लश शौचालय अपनाने को प्रेरित हुए हैं। शौचालयों की सीवेज लाइन को गाँव के बाहर खेत में मानव मल आधारित बायो विद्युत संयंत्र तक पहुँचाया गया है। संयंत्र में मानव मल के द्वारा उत्पन्न होने वाली गैस से जनरेटर के माध्यम से विद्युत उत्पन्न की जाती है। इस संयंत्र से पाँच किलोवॉट विद्युत बनती है जिससे लगभग 200 से 300 बल्ब जलाये जा सकते हैं, विद्युत मोटर चलाई जा सकती है और ठीक वैसे ही उपयोग किया जा सकता है जैसे एल.पी.जी. गैस का करते हैं। इस संयंत्र से निकलकर मानव मल एक अच्छे किस्म का खाद बन जाता है, जिसका उपयोग खेतों में किया जा सकता है। लगभग 22 लाख रुपये लागत के मानव मल आधारित बायो विद्युत उत्पादन तकनीक ने एक नई पहल शुरू की है, जो दूसरों को प्रेरणा का कार्य करेगी। इस संयंत्र की स्थापना के लिए राशि सांसद श्री कैलाश जोशी द्वारा स्थानीय क्षेत्र विकास निधि से उपलब्ध कराई गई।

(लेखक उप संचालक जनसंपर्क हैं।) ❀